REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

नागार्जुन के उपन्यासों में विधवा – चिंतन

डॉ. प्रकाश कुमार अग्रवाल
प्राध्यापक, खड़गपुर कॉलेज, हिंदी विभाग, खड़गपुर, पश्चिम बंगाल.

भारतीय समाज में विधवा-समस्या एक बड़ी सामाजिक समस्या है, लेकिन क्योंकि विधवा परिवार में रहती है इसलिए पारिवारिक समस्या पहले है । "उसके लिए आर्थिक स्वतंत्रता की आवश्यकता होती है। वह बैठे-बैठे खाती है इसलिए सबको वह भार मालूम होती हैऔर लोग उसे तंग करते हैं।"1

नागार्जुन के उपन्यासों में अनेक विधवा स्त्री पात्र हैं जो परोपजीवी बनकर दैनिक जीवन जीने को बाध्य हैं। नागार्जुन ने अपने उपन्यासों-'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा','नई पौध','बाबा बटेसर नाथ','दुख मोचन','उग्रतारा' आदि में भारतीय समाज में अपमानित, तिरस्कारपूर्ण और यातना- पूर्ण जीवन जीने वाली नारी के विधवा जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। उनके प्रथम उपन्यास 'रतिनाथ की चाची' की मुख्यकथा एक उपेक्षित, अपमानित और यातनापूर्ण विधवा जीवन जीने कोविवश गौरी से संबंधित है।

गौरी का जन्म मध्यवर्गीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था । बचपन अच्छी तरह गुजरा उसके पिता चुम्मन झा ने कुलीनता को महत्व देते हुए बड़े परिवार में, किंतु आर्थिक रूप से विपन्न मैथिल ब्राह्मण परिवार में एक रोगी और आलसी आदमी से गौरी की शादी करवा दी । उसने शीघ्र ही इस संसार से विदा ले ली स्वाभिमानी गौरी ने अपने मायके के बजाय अपने पति के घर में रहना ही उचित समझा । गौरी के वैधव्य जीवन की असल कथा यहीं से शुरू होती है।

गौरी का देवर जयनाथ रुग्ण मानसिकता एवं कामुक चित्र वाला व्यक्ति था। वह गौरी को अपने प्रेमजाल में फंसा कर अपनी हवस का शिकार बना लेता है। गौरी गर्भवती हो जाती है और यहीं से उसके विधवा जीवन की अपमानपूर्ण, तिरस्कारपूर्ण और यातनापूर्ण शुरुआत होती है। इस स्थिति का वास्तविक कारण खोजती हुई गौरी इस निष्कर्ष पर पहुंचीहै कि "दरिद्र कुल में लड़की ब्याहने का ही परिणाम था।"2 गौरी उस अमावस की भयानक रात को याद करती है-"एक घनी और अंधेरी छाया मेरे बिस्तरे की तरफ बढ़ आई। उसके बाद क्या हुआउसका होश अपने को नहीं रहा...।"3 जब होश आया तो पाया कि वह समाज की दृष्टि से पतित हो गई है। स्वयं बाल वैधव्य की रंगरेलियां मनाने दमयंती सहानुभूति दिखाने के बहाने आई, लेकिन गांव में घूम- घूम कर सबों को कहती फिरी- "सामाजिक बहिष्कार तो उमानाथ की मां (गौरी) का हर हालत में करना ही पड़ेगा।"4

वह जहां विधवा गौरी को बदनाम करती फिरती थी, वही एक अजीब तर्क देकर जयनाथ का इन शब्दों में बचाव करती थी- "मर्दों का तो कोई ठिकाना है नहीं । अगर हम ना रहे तो संसार से आचार विचार हट जाए।"5 अर्थात समाज की बुराइयों का ठेका नारी समाज ने ही ले रखा है। दमयंती हर जगह प्रचार करती चलती कि "उमा नाथ की मां व्यभिचारिणी है ,पतिता है, भ्रष्टा है,कुलटा है, छिनार है, उससे हमें किसी प्रकार का संबंध नहीं रखना चाहिए। बोलचाल बंद , बात- विचार बंद । प्रत्येक व्यवहार बंद । हां जयनाथ और रतिनाथ दोनों बाप- पूत यदि प्रायश्चित कर ले, तो इस समाज में उनके लिए स्थान हो सकता है, परंतु उमानाथ की मां को समाज किसी हाल में क्षमा नहीं कर सकता ।"6

समाज के ऐसे ही अन्यायपूर्ण विचारों के कारण विधवा स्त्रियों का पारिवारिक- सामाजिक जीवन यातनापूर्ण बन जाता है।

गौरी की तरह और भी कई विधवाएँ हैं, जो गौरी की तरह ही यातनापूर्ण जीवन व्यतीत करती हैं। अनेक विधवाएँ घुट- घुट कर जीवन व्यतीत करती हैं ,लेकिन कुछ के मुंह में बोली है ,जो विधवाओं की समस्याओं एवं समाज की विधवाओं के प्रति उदासीनता पर खुलकर बोलती हैं ।गौरी की मां भी विधवा है ।वह गौरी के दुख को जानती है और समाज में दमयंती जैसी कूटनी स्त्रियों को भी । वह गौरी के बचाव के लिए अपने समाज से लड़ती है। काशी में जयनाथ का सुशीला नामक एक विधवा से परिचय होता है। वह जयनाथ से कहती है-"तुम जिस जाति में जिस समाज में पैदा हुए हो वह जिंदा नहीं, मुर्दाघर है, वह छाड़नहै।"7

सच पूछा जाए तो नागार्जुन का 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास उच्च कुलीन ब्राह्मण परिवार में चिता की ज्वाला में जीती विधवा स्त्रियों का जीवंत दस्तावेज है।

'दुख मोचन' उपन्यास की माया का विवाह कुलीन मगर दरिद्र परिवार में हुआ था ।उसका पति बूढ़ी गंडक पार करते समय नाव उलट जाने के कारण डूब कर मर गया था ।वह गौरी की तरह स्वाभिमानी नहीं थी। वह ससुराल में नहीं रही, क्योंकि वहां वहां बूढ़ी सास थी, आवारा देवर था। मायके में निर्वाह बड़ी मुश्किल से होता था। वह अपनी बड़ी भाभी से आग्रह कर मायके में ही रह गई ।

ऐसा नहीं है कि विधवा के प्रति परिवार में एवं समाज में पुरुषों की सोच दकियानूसी है या सभी औरतें दमयंती की तरह होती हैं। नागार्जुन ने 'दुख मोचन' उपन्यास में विधवा समस्या के लिए प्रगतिशील दृष्टिकोण का समर्थन किया है । विधवा माया विधुर कपिल के संपर्क में आती है। दोनों में प्रेम होता है एवं बढ़ता चलता है। दोनों विवाह करने की सोचते हैं, तब नागार्जुन वर्तमान समाज व्यवस्था की वास्तविकताओं की ओर संकेत करते हुए कहते हैं-"एक तो विधवा-विवाह ही इस गांव के लिए अनहोनी घटना थी। दूसरे कपिल राजपूत था।"8

पुरानी पीढ़ी के दकियानूसी- रूढ़िवादी उच्च जाति के कुलीन ब्राह्मण इस विवाह के बारे में कहते हैं-"राम-राम ! घोर कलयुग आ गया है। जो कहीं नहीं हुआ था वह टमका-कोइली गांव में हो रहा है।"9 परंतु दूसरी जातियों के प्रगतिशीललोग सोचते हैं-"वह ठीक ही हुआ था... विधवा लड़की ने रंडुआलड़के से संबंध कर लिया तो क्या बुरा किया? इधर-उधर भटकती और भरस्टहोती तो गांव कुल का नाम डुबाती... वह अच्छा होता कि यह अच्छा हुआ?"10 अंत में लेखक एक सार्थक टिप्पणी करते हैं-"दस-पांच दकियानूसों को छोड़कर बाकी लोगों का ऐसा ही विचार था।"11

इस तरह नागार्जुन ने 'दुख मोचन' उपन्यास में माया की मां को जो प्राचीन संस्कारों में पली बढ़ी थी वह भी अपनी बेटी के जीवन को सुखमय देखने की लालसा में असवर्ण विवाह तथा पुनर्विवाह का प्रस्ताव कबूल करने वाली मां के रूप में उपस्थित किया है । दरअसल, विधवा- समस्या समाधान के संदर्भ में नागार्जुन की सोच भी पुनर्विवाह की ही थी।

इसी प्रकार 'उग्रतारा' उपन्यास की उगुनी का पति एक स्ट्रीमर- दुर्घटना में मर गया था। विधवा उगनी बाद में विधुरकामेश्वर से प्रेम करने लगती है ।वह अपने परिवार में विधवा- जीवन व्यतीत करने वाली अकेली नारी नहीं है। उसकी पिछली कई पीढ़ियां विधवा- जीवन के अभिशाप से ग्रस्त थी । लेखक के शब्दों में-"उगनी नई विधवा थी ।उसकी मां पुरानी विधवा थी। कहते हैं दादी भी विधवा थी।"12 अंत में उगनीकामेश्वर से पुनर्विवाह करके अपने परिवार के विधवा -जीवन के अभिशाप को खत्म करती है।

'नई पौध' की रामेसरी अपने दुर्भाग्य पर उतना कभी नहीं रोई जितना कि बहनों की बदनसीबी पर रोती थी । क्योंकि उसकी चार -चार बहनें दुर्भाग्य से विधवा हो गई थीं। वह स्वयं विधवा जीवन का दंश झेल रही थी और देवरानी-जेठानी के दुर्व्यवहार से तंग आकर मां -बाप की शरण में आ गई थी। लेकिन वह बिसेसरी को साठ साल के बूढ़े से ब्याह कराके विधवा- जीवन की ओर नहीं धकेलना चाहती थी ।

इस प्रकार नागार्जुन समाजवादी- यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए तथा भारतीय ग्रामीण समाज की सड़ी-गली ,जर्जर और रूढ़ मान्यताओं का विरोध करते हुए विधवा- समस्या का समाधान प्रगतिशील कदमों से करने की वकालत करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. डॉ रामविलास शर्मा, प्रेमचंद आलोचनात्मक परिचय,पृ.119
2. रतिनाथ की चाची, पृ.145
3. वही, पृ.132
4. वही, पृ.175,76
5. वही, पृ.175
6. वही, पृ.175
7. वही, पृ.189
8. दुखमोचन, पृ.62
9. वही ,पृ.75
10. वही, पृ.75
11. वही,पृ.75
12. उग्रतारा(नागार्जुन संपूर्ण उपन्यास) पृ.373

LBP PUBLICATION